an>

Title: Need to take immediate remedial steps to check soil erosion by rivers in various districts of Jharkhand particularly in Palamu and Garwha districts.

श्री विष्णु दयाल राम (पलामू) ः मिट्टी के कटाव से संबंधित प्रकाशित एक सर्वे की रिपोर्ट जो भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र (इसरो) की संस्था स्पेस एप्लीकेशन्स सेंटर, अहमदाबाद की अगुवाई में कराया है, के तथ्य चौंकाने वाले और चिंताजनक हैं। सर्वे में दर्शाया गया है कि झारखण्ड में पिछले आठ साल में 80 हजार हैक्टेयर भूमि मिट्टी के कटाव के कारण लगभग बंजर हो गयी है। इस भूमि की उपजाऊ मिट्टी की परत 15 सेंटीमीटर की बारिश और बाढ़ के कारण नालों और नदियों में बहती जा रही है। सर्वे के आधार पर तैयार रिपोर्ट में झारखण्ड प्रदेश के चार जिलों की स्थिति भयावह है जिनमें से मेरे संसदीय क्षेत्र अंतर्गत पलामू जिला भी है।

रिपोर्ट बताती है कि पलामू के कुल भू-भाग 8,02,291 हैक्टेयर में से 50,363 हैक्टेयर भूमि कटाव के दायरे में है। पलामू एवं गढवा जिलान्तर्गत न केवल उत्तर कोयल नदी, अमानत एवं सोन नदी से भीषण कटाव हो रहा है जिससे न केवल कृषि योग्य भूमि कट रही है, बल्कि मकान भी कटने शुरू हो गए हैं। जिससे लोग घर-बार छोड़कर दूसरी जगहों पर जा रहे हैं। खासकर उत्तर कोयल नदी के पूर्वी तट पर कादल गाँव से सलखनी तक, उटारी से मुहम्मदगंज तक, मुहम्मदगंज से भजनिंया पंचायत में एवं श्रीनगर का इलाका पूरी तरह से कटाव की चपेट में आ गया है और नदी का पानी कम होने पर खेती योग्य भूमि में बालू एकत्र हो रहा है। यदि समय रहते इस भूमि कटाव पर शीघ्र नियंत्रण के लिए प्रभावकारी कदम नहीं उठाये गये तो लोगों को विवश होकर बड़ी संख्या में पलायन करना होगा।

मानव सभ्यता को बचाए रखने के लिए मिट्टी के क्षरण को रोकना बेहद जरूरी है। 1000 साल लग जाते हैं मिट्टी की एक उपजाऊ परत बनने में।

मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि मिट्टी के कटाव जैसे संवेदनशील मुद्दे पर राज्य सरकार के साथ मिलकर जल्द ही कोई निर्णायक कदम उठाकर वर्तमान तथा संभावित समस्याओं को रोकने के लिए प्रयास शुरू करें।